संवाद

बच्चे सृजनात्मकता का कोष होते हैं। उनमें सदैव नित नई उमंगों और जिज्ञासाओं का प्रवाह होता रहता है। हर बच्चे की अपनी विशिष्ट सृजनात्मक क्षमताएँ होती हैं। बच्चों की सृजनात्मकता को विकसित करना और उनकी मौलिकता को जीवन देना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

यांत्रिकता, बंधी-बंधाई परिपाटी, रसविहीन शिक्षण पद्धतियाँ बच्चों में पढ़ने के प्रति उनकी रुचि को कम कर देती है। अतः यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि बच्चे सिर्फ़ कलम से ही न लिखें अपितु मन से भी लिखें। बच्चों के स्कूली जीवन का नाता बाहरी जगत से जोड़ने और विभिन्न कौशलों का विकास करते हुए उनके ज्ञान सृजन करने का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षकों पर होता है जिसमें अभिभावक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस पत्रिका में कुल ग्यारह लेख हैं। पत्रिका की शुरुआत 'भारत के दक्षिण क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा पाठ्यपुस्तकों में दृश्य चित्रण का अध्ययन' लेख से की गई है यह लेख दक्षिण क्षेत्र की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में गुणवत्तापूर्ण चित्रों की वृद्धि करने के सुझाव को प्रेक्षित करता है। पाठ्यपुस्तकों में चित्रों का अपना ही महत्व होता है। चित्र बच्चों की पाठ्यपुस्तकों के प्रति रूचि तो बढ़ाते ही हैं, साथ ही साथ उन्हें बाहरी दुनिया से भी जोड़ते हैं। बच्चों में पाठ की बेहतर समझ विकसित करने में पाठ्यपुस्तकों के चित्रों का विशेष महत्व होता है।

वर्तमान युग तकनीक का युग है। तकनीक के माध्यम से शिक्षा की सर्व सुलभता में वृद्धि हुई है और सीखने के नए-नए तरीके भी विकसित हुए हैं। शिक्षा 'संस्कृत अध्यापन कौशल विकास में नवीन तकनीक की भूमिका' शोध तकनीक की सहायता से विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा के सीखने के प्रतिफलों में बढ़ोतरी को प्रदर्शित करता है। 'वाह! क्या दिन हैं?' कहानी निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के महत्व को उजागर करते हुए बताती है कि इस अधिनियम के तहत नीलम जैसे अनेक बच्चों को (जो पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक या किन्हीं अन्य कारणों से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए हैं) निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जा रही है।

कहानियाँ बच्चों की कल्पना का विस्तार करती हैं। 'कहानियाँ और साझा लेखन' लेख में लेखिका ने अपने कहानी पाठ के अनुभव के माध्यम से जाना कि बच्चों को लिखना सिखाना किसी यांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा नही हैं, बल्कि इसे कहानी वाचन के माध्यम से बहुत ही सरल एवं रोचक ढंग से सिखाया जा सकता है और इसी अनुभव को लेख के माध्यम से पाठकों के समक्ष रखा।

© NCERT not to be republished

'गणित में गलतियों से सीखने के अवसर' शोध पत्र बताता है कि शिक्षकों को बच्चों की गलतियों को नज़रअंदाज करने की बजाए उन गलतियों को बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में एक पड़ाव समझना चाहिए। शिक्षकों को बच्चों में गलती के डर से सवाल अधूरा छोड़ने की जगह उनमें सवाल को पूरा हल करने की जिजीविषा को विकसित करना चाहिए।

'सामाजिक विज्ञान विषय की उपलब्धि पर आगमनात्मक प्रशिक्षण प्रतिमान की प्रभावशीलता' शोध पत्र बताता है कि आगमनात्मक प्रशिक्षण प्रतिमान की सहायता से सामाजिक विज्ञान विषय के संप्रत्ययों को कितनी आसानी से विद्यार्थियों को सिखाया जा सकता। यह शोधकर्ताओं, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों सभी के लिए उपयोगी है। 'बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एवं अभिभावकों की भूमिका' लेख बच्चों की शिक्षा में माता-पिता एवं अभिभावकों की अनिवार्य भूमिका के महत्व पर प्रकाश डालता है। अभिभावकों की सहायता एवं मार्गदर्शन से बच्चे रुचिपूर्ण ढंग से सीखते हैं और उनके अधिगम स्तर में भी वृद्धि होती है।

'सामाजिक सरोकार के मुद्दे और विद्यालय की अधिगम-संस्कृति' लेख शिक्षा के माध्यम से बच्चों को समाज के प्रति जागरूक करने की बात उदाहरणों के माध्यम से बताता है। शिक्षा उनकी समझ और विवेक को विकसित करती है और उन्हें समाधान ढूँढने के लिए प्रेरित करती है।

'आम के बाद गुठली आती है!' लेख कक्षा में बच्चों के जवाबों से उभरने वाले समाज–सांस्कृतिक और आर्थिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करता है। 'कहानी निर्वाचन का शैक्षिक महत्व' लेख न केवल बच्चों के जीवन में कहानी के महत्व को उजागर करता है अपितु यह कहानी निर्वाचन की उस सुनहरी परंपरा को भी याद दिलाता है जो अब बच्चों के जीवन से नदारद होती जा रही है। कहानी का निर्वाचन बच्चों में कल्पनाशक्ति का संचार करता है और उनमें साहित्य के प्रति रुचि विकसित करता है।

'कार्यरत शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए "निष्ठा" कार्यक्रम— एक अनूठा प्रयास' लेख शिक्षकों की क्षमता का संवर्धन करने और उसे समेकित रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है। प्रस्तुत अंक में 'विशेष' के अंतर्गत हाल ही में नई शिक्षा नीति (प्रारूप) 2019, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सुझाव हेतु जारी की गई है जिसके द्वितीय अध्याय 'बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान' को इस अंक में 'विशेष' के अंतर्गत शामिल किया गया है।

पत्रिका में लेखकों का जितना महत्वपूर्ण स्थान होता है उतना ही महत्वपूर्ण स्थान पाठकों का भी होता है। पाठकों की प्रतिक्रियाएँ पत्रिका की गुणवत्ता वृद्धि में सहायक होती हैं। आप पत्रिका के किसी भी अंक या लेख पर अपने विचार अथवा सुझाव अवश्य लिख कर भेजें। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

अकादमिक संपादक

© NCERT not to be republished